

---

Renuka Stotram by Shridhara Swami

रेणुकास्तोत्रं श्रीधरस्वामिकृतम्

Document Information

---

Text title : reNukAstotraM shrIdharasvAmikRitaM

File name : reNukAstotramshrIdharasvAmi.itx

Category : devii, reNukA, stotra, devI, shrIdharasvAmI

Location : doc\_devii

Author : Shridhar Swami

Transliterated by : Kaushal S. Kaloo kaushalskaloo at gmail.com

Proofread by : Kaushal S. Kaloo kaushalskaloo at gmail.com

Translated by : <http://ioustotra.blogspot.com/2010/10/shri-renuka-stotram.html>

Latest update : June 30, 2013

Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 24, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

रेणुकास्तोत्रं श्रीधरस्वामिकृतम्



श्रीगणेशाय नमः ।

शिवां शान्तरूपां मनोवागतीतां  
निजानन्दपूर्णां सदाऽद्वैतरूपाम् ।  
परां वेदगम्यां परब्रह्मरूपां  
भजे रेणुकां सर्वलोकैकवेद्याम् ॥ १ ॥

सदान्चारसद्भक्तिबोधादिभिर्या  
गुरोरङ्घ्रिशुश्रूषयां मुख्यवृत्त्या ।  
सुवेद्या सुलभ्या परानन्दपूर्णा  
भजे रेणुकां तां विमोहप्रशान्त्यै ॥ २ ॥

श्रुतिर्नेतिनेतीति सर्वं निरस्य  
वदत्येकमाद्यं विभुं चित्सुखं यत् ।  
तदेवावशिष्टं स्वरूपं विशुद्धं  
भजे रेणुकां तां सदा मृत्युहीनाम् ॥ ३ ॥

यदानन्दसिन्धौ निमग्नो न पश्येद्-  
अहो कर्मजालं फलं वा तदीयम् ।  
न जैवं न शैवं जगन्नैव मायां  
चिदेकस्वरूपां भजे रेणुकां ताम् ॥ ४ ॥

अनेकान्तिकां सर्वभेदातिरूपां  
तमोऽज्ञानदुःखातिगां शुद्धरूपाम् ।  
सदाऽध्यात्मविद्याप्रदानैकशीलं  
भजे रेणुकां मुक्तिसौख्याधिदेवीम् ॥ ५ ॥

त्रितापप्रशान्त्यै समाराध्यमानां  
सदा जीवलोके स्वसौख्यप्रदात्रीम् ।

भवोम्बोधिसेतुं चिदानन्दकन्दां  
भजे रेणुकां ज्ञानमुद्रैकलक्ष्याम् ॥ ६ ॥

सदा भक्तहृत्कौमुदीं भद्रभद्रां  
सदोङ्कारवाच्यां वरेण्यां शरण्याम् ।  
स्वभक्तार्तिनाशां शुभाङ्गां गुणाढ्यां  
भजे रेणुकां भक्तसौरव्याब्धिरूपाम् ॥ ७ ॥


सदा भक्तवात्सल्यपूर्णां सुरम्यां  
सुरेन्द्रादिभिः स्तूयमानां सुषूक्तैः ।  
सदा भक्तवृन्दैश्च संसेव्यमानां  
भजे रेणुकां भक्तभाग्यां भवानीम् ॥ ८ ॥


पठेद्यः सदा भक्तियुतो विशुद्धः  
स्ववर्णाश्रमाचारतो नित्ययुक्तः ।  
स मुक्तः कृती रेणुकायाः प्रसादात्  
सदा राजते राजते लोकपूज्या ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यसद्गुरुभगवता श्रीधरस्वामिना  
विरचितं श्रीरेणुकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded by Kaushal S. Kaloo kaushalskaloo at gmail.com

---

——  
*Renuka Stotram by Shridhara Swami*  
pdf was typeset on January 24, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

